



वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, प्रत्येक ग्रह का अपना एक अंतर्निहित, प्राकृतिक स्वभाव होता है, चाहे वह किसी भी जन्म कुंडली (Kundli) में क्यों न स्थित हो। यह मूलभूत वर्गीकरण ग्रहों को **नैसर्गिक शुभ ग्रह (Natural Benefics)** और **नैसर्गिक अशुभ ग्रह (Natural Malefics)** में विभाजित करता है।

इस प्राकृतिक अंतर को समझना आपको यह मूल्यांकन करने में मदद करता है कि ग्रह अपने मूल चरित्र को कैसे व्यक्त करते हैं - चाहे वे स्वाभाविक रूप से पोषण और सामंजस्य प्रदान करते हों या विकास लाने के लिए दबाव, अनुशासन और घर्षण पैदा करते हों।

नैसर्गिक शुभ ग्रह क्या हैं? (Natural Benefic)

शुभ का अर्थ है मंगलकारी, सौम्य और पोषण करने वाला।

नैसर्गिक शुभ ग्रह कोमल, सकारात्मक और रचनात्मक ऊर्जा से युक्त होते हैं। स्वाभाविक रूप से, वे कुंडली के जिस भी भाव में बैठते हैं या जिस पर दृष्टि डालते हैं, उसका निर्माण, रक्षा, विस्तार और उसमें कृपा लाने का प्रयास करते हैं।

नैसर्गिक अशुभ ग्रह क्या हैं? (Natural Malefic)

अशुभ का अर्थ है चुनौतीपूर्ण, कठोर या कठिन परीक्षा लेने वाला।

नैसर्गिक अशुभ ग्रह तीव्र, उष्ण या प्रतिबंधात्मक ऊर्जा से युक्त होते हैं। वे व्यर्थ की हानि पहुँचाने के लिए नहीं होते; बल्कि, वे ब्रह्मांडीय शिक्षक के रूप में कार्य करते हैं, जो आंतरिक शक्ति का निर्माण करने और कर्मों को क्षय करने के लिए दबाव, कठिन परिश्रम, परिवर्तन या बाधाओं का उपयोग करते हैं।

नैसर्गिक शुभ ग्रह (Natural Benefics)

- गुरु / बृहस्पति (Jupiter):** सबसे महान नैसर्गिक शुभ ग्रह। ज्ञान, कृपा, सौभाग्य, विस्तार, आध्यात्मिकता और दिव्य मार्गदर्शन का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- शुक्र (Venus):** प्रेम, सामंजस्य, कला, सौंदर्य, संबंध, विलासिता और सुख-सुविधाओं के ग्रह।
- चंद्र (उज्ज्वल चंद्रमा):** शुक्ल पक्ष (Shukla Paksha) में बढ़ते समय और मजबूत पक्ष बल होने पर यह अत्यंत शुभ होते हैं, जो भावनात्मक शांति, मानसिक स्पष्टता और पोषणकारी ऊर्जा लाते हैं।
- बुध (Mercury):** अकेले स्थित होने पर या अन्य शुभ ग्रहों के साथ होने पर स्वाभाविक रूप से शुभ होते हैं, जो बुद्धि, तीव्र संवाद कौशल, तर्क और हास्य प्रदान करते हैं।

नैसर्गिक अशुभ ग्रह (Natural Malefics)

- शनि (Saturn):** मुख्य नैसर्गिक अशुभ ग्रह और अत्यंत कठोर अनुशासनप्रिय शिक्षक। देरी, कठिन परिश्रम, अनुशासन, कर्म, प्रतिबंध और दीर्घकालिक धैर्य पर इनका आधिपत्य है।
- मंगल (Mars):** उग्र सेनापति। आक्रामकता, संघर्ष, जुनून, आवेग, तीक्ष्ण क्रियाओं और शारीरिक ऊर्जा को नियंत्रित करते हैं।
- सूर्य (The Sun):** अपनी तीव्र ऊष्मा, अहंकार और दग्ध करने वाले स्वभाव के कारण एक सौम्य अशुभ ग्रह (क्रूर ग्रह) के रूप में वर्गीकृत, जो भावों के कोमल विषयों को प्रभावित कर सकते हैं।
- राहु (North Node):** भ्रम, अत्यधिक लगाव, अप्रत्याशित अराजकता, सांसारिक आसक्ति और अचानक आने वाले व्यवधानों के छाया ग्रह।
- केतु (South Node):** वैराग्य, अचानक होने वाली हानि, अलगाव, तीक्ष्ण विच्छेदन और गहन आध्यात्मिक परिवर्तन के छाया ग्रह।

महत्वपूर्ण परिस्थितिजन्य नियम

वैदिक ज्योतिष में नैसर्गिक शुभ ग्रहों के संबंध में दो महत्वपूर्ण परिस्थितिजन्य नियम शामिल हैं:

1. चंद्रमा की कलाएँ मायने रखती हैं: शुक्ल पक्ष (Shukla Paksha) का बढ़ता/उज्ज्वल चंद्रमा एक मजबूत शुभ ग्रह के रूप में कार्य करता है। हालाँकि, कृष्ण पक्ष (Krishna Paksha) का क्षीण/अंधकारमय चंद्रमा, जो अपना प्रकाश खो रहा होता है, एक सौम्य अशुभ ग्रह के रूप में कार्य करता है।

2. बुध अपनी संगति के अनुसार फल देते हैं: बुध एक दर्पण की तरह कार्य करते हैं। जब वे शुभ ग्रहों (जैसे गुरु या शुक्र) के साथ स्थित होते हैं, तो वे एक शुभ ग्रह के रूप में कार्य करते हैं। जब वे अशुभ ग्रहों (जैसे मंगल, शनि, राहु या केतु) के साथ स्थित होते हैं, तो वे उनके कठोर लक्षणों को अपना लेते हैं और एक अशुभ ग्रह के रूप में कार्य करते हैं।

संक्षिप्त सारांश

यद्यपि नैसर्गिक स्थिति किसी ग्रह के अंतर्निहित व्यक्तित्व को परिभाषित करती है, वहीं उसकी कार्यात्मक (तात्कालिक) स्थिति यह निर्धारित करती है कि वह आपके विशिष्ट लग्न (Lagna) के लिए शुभ फल लाएगा या अशुभ। शनि जैसा नैसर्गिक अशुभ ग्रह भी एक कार्यात्मक शुभ (नायक) बन सकता है, जबकि बृहस्पति जैसा नैसर्गिक शुभ ग्रह भी कभी-कभी एक कार्यात्मक चुनौती बन सकता है!

<https://astroarpitanath.com/hindi/subh-asubh-planets/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।